Date ___/___/___

वॉन थ्यूनेन के भूमि उपयोग मॉडल क्या है।

कृषि क्रिया का स्थानीयकरण या अवस्थिति

कृषि क्रिया के स्थानीयकरण के लिए जर्मन विद्वान वान थ्यूनेन की सामूहिक विश्लेषणात्मक पद्धति का अनुसरण किया जाता है। तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त के अनुसार यदि दो क्षेत्रो मे दो फसलो का उत्पादन सम्भव हो तथा प्रत्येक क्षेत्र मे किसी एक फसल का उत्पादन दूसरे की अपेक्षा अधिक हो सकता है। मान लिजिए A और B दो क्षेत्र है। जिनमे गेहूं व मक्का का प्रति इकाई उत्पादन निम्न प्रकार है।

	A	B
गेहूं	35 कुन्तल	30 कुन्तल
मक्का	45 कुन्तल	25 कुन्तल

उपर्युक्त स्थिति मे A इकाई मे मक्के का उत्पादन तथा B इकाई मे गेहूँ का उत्पादन अधिक लाभदायक होगा क्योकि पहले क्षेत्र मे मक्का का सापेक्षिक उत्पादन लाभ अधिक जबकि दूसरे क्षेत्रो मे गेहूं उत्पन्न करने मे सापेक्षिक उत्पादन हानि कम है।

वॉन थ्यूनेन का सिद्धान्त

जर्मन विद्वान जॉन हेनरीच वान थ्यूनेन ने कृषि क्रिया की अवस्थिति से सम्बन्धित अपना सिद्धान्त 1826 ई मे प्रस्तुत किया

(1) वॉन थ्यूनेन ने एक दूसरे एकाकी इस्टेट की कल्पना की जिसमे एक ही नगर स्थित माना। उन्होने नगर के चारो ओर एक विस्तृत कृषि क्षेत्र की कल्पना की यह नगर ही एकाकी इस्टेट का बजार केन्द्र होता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date ___/___/___

(2) थ्यूनेन की दुसरी मान्यता थी कि एकाकी बजार ऐसे समतल क्षेत्र मे स्थित होगा जहा सभी स्थानो पर उत्पादन तथा परिवहन लागत समान होती है।

(3) इस एकाकी इस्टेट मे एक ही प्रकार का परिवहन साधन अर्थात् घोडा गाडी या नावे उपलब्ध है।

(4) इस एकाकी इस्टेट मे केन्द्रीय नगर के आलावा शेष ग्रामीण आबादी हो इसमे बसने वाले किसान अधिकतम लाभ प्राप्त करने के इच्छुक हो तथा नगर मे माँग के अनुसार फसलो के फेर बदल करने मे सक्षम हो

(5) परिवहन व्यय दूरी तथा भार के अनुपात मे बढता हो

(6) एकाकी इस्टेट मे सर्वत्र एक सा प्राकृतिक वतावरण हो अर्थात धरातल जलवायु व मिट्टी की उत्पादन क्षमता सर्वत्र समान हो तथा फसलो के उत्पादन के अनुकूल हो

थ्यूनेन मॉडल के अनुसार कृषक का लाभ तीन चरो पर आधारित होता है जिसे निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है

$P = V - (E + T$

अर्थात P = कृषक का लाभ

V = वस्तु का विक्रय मुल्य

E = उत्पादन लागत

T = परिवहन लागत

थ्यूनेन के नियम — थ्यूनेन ने दो नियमो का प्रतिपादित किया था

प्राचार्य
मेरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Saathi

Date __/__/____

(II) प्रत्येक प्रकार की कृषि पेटी का आन्तरिक दूरी कृषि से अधिक लाभ देने वाले विकल्पों द्वारा निधारित होगी अर्थात जिस प्रकार की फसल से कृषक को अधिक लाभ प्राप्त होगा।

भूमि उपयोग के संकेन्द्रीय

थ्यूनेन के अनुसार बजार या केन्द्रीय नगर मे उद्योग स्थापित होगा जिसका भूमि उपयोग औद्योगिक एवं व्यावसायिक होगा नगर के समीप सचित प्रथम वृत खण्ड शाक-सब्जी तथा दुग्धोउत्पादन का कार्य होगा इन पदार्थों का अधिक दूरी तक परिवहन करना लाभदायक नही होता। अतः शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं की उत्पादन के लिए नगर के निकट का संकेन्द्रीय वलय उपयोग मे लाया जाता है।

थ्यूनेन के संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त की दुसरी पेटी मे जलाऊ ईधन के लिए लकड़ी का उत्पादन महत्व रखता है 19 वी शताब्दी मे पुर्वार्द्ध मे जर्मनी मे जलाऊ ईधन के लिए लकड़ी के उत्पादन की अवश्यकता महसुस की थी। परन्तु आधुनिक समय मे जलाऊ ईधन के रूप मे कोयला व प्राकृतिक गैस का प्रयोग होने लगा है।

उन्होने तीसरी पेटी मे कृषि भूमि उपयोग की वह क्रिया मानी जिसमे अन्नोत्पादन प्राप्त करने के लिए परती भूमि नही छोड़ी जाती

चौथे वृत खण्ड सुधरी तकनिकी द्वारा विस्तृत खेती की जाती है। जिसमे परती व चरण भूमि दोनो ही निहित है। इसमे सिचाई की कम अवश्यकता पड़ती है

प्राचार्य
... मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

पाँचवा पेटी तीन खेत प्रणाली पर आधारित होगी जिसके लगभग एक तिहाई भाग मे विस्तृत खेती दूसरे मे परती क्षेत्र और तीसरे मे पशुपालन क्षेत्र स्थित है।

वान थ्यूनेन के सिद्धान्त की आलोचना

(1) वान थ्यूनेन के सिद्धान्त की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि थ्यूनेन द्वारा कल्पित मान्यताएँ ऐसी है। जो वास्तविक जगत से मेल नही खाती इसलिए उनके द्वारा प्रदर्शित कृषि उत्पादन के संकेन्द्रीय वलय कभी भी पूर्णरूपेण चरितार्थ नही होते

(2) थ्यूनेन के सिद्धान्त प्रतिपादन के समय परिवहन के साधन आज जैसे नही थे आज तीव्रगामी परिवहन के साधनो का विकास हो गया है। और ताप शील नियन्त्रित यानो की सहायता से शीघ्र नष्ट होने वाले पदार्थो को सुदूर बजारो तक भेजना संभव हो गया है। अत: उसका उत्पादन किसी नगर या बजार केन्द्र के निकट होना अनिवार्य नही है।

(3) थ्यूनेन के समय मे जलाऊ ईंधन के रूप मे लकड़ी का इस्तेमाल आवश्यक समझा जाता था परन्तु आज ईंधन के लिए कोयला प्राकृतिक गैस व जल विद्युत का प्रयोग होने लगा है।

(4) थ्यूनेन के सिद्धान्त की आलोचना इस आधार पर भी की जाती है कि यह आवश्यक नही कि बाजार केन्द्र के चारो ओर प्राकृतिक वातावरण विशेषकर मिट्टी की उत्पादन क्षमता एक जैसी हो

21/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया